# जैनेंद्रकुमार की कहानियों में मनोवैज्ञानिक चित्रण

## ( पाजेब कहानी के संदर्भ में )

डॉ. बाळासाहेब पगारे
बी.एन.एन. महाविद्यालय, भिवंडी
जि. ठाणे.

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसका अपना होता है। व्यक्तित्व ही मानव में व्यक्ति होने का बोध कराता है। सामान्यतः व्यक्तित्व का मतलब व्यक्ति के भौतिक आकार–प्रकार, रहन–सहन, वेशभूषा, व्यवहार आदि से होता है। अपितु दर्शनशास्त्र व्यक्ति के बाह्य और अंतर्मन दोनों को व्यक्तित्व मानता है। वस्तुतः मनोविश्लेषण का अर्थ है मन का विश्लेषण। यह विश्लेषण मन के तीन अनुभागों चेतन, अचेतन और अवचेतन में से अवचेतन की व्याख्या है। वह हमारी ज्ञानेंद्रिय और कर्मेंद्रिय अनुस्यूत होता है। इस संदर्भ में डॉ. राजेंद्र मिश्रजी ने लिखा है, ''चेतन मन दृश्य होता है हमारे क्रिया व्यवहार से। परंतु अवचेतन मन, जिसके बारे में कहा जाता है कि मानव मन जल में अधडूबे पत्थर की तरह है, जिसका वह भाग जो सरलता से दृश्य होता है चेतन है और अदृश्य डूबा भाग अवचेतन मन है।''[1] इस तरह अवचेतन मन परोक्ष–अपरोक्ष हमारे चेतन मन और क्रिया–व्यवहार को प्रभावित करता है। कहानी में पात्रों के क्रिया–व्यवहारों द्वारा मनोविश्लेषण किया जाता है। कहानी में तटस्थ होकर पात्रों का मनोविश्लेषण, कहानीकार के जीवन के आधार पर पात्रों का विश्लेषण और पाठक के मानसिकता के माध्यम से घटनाओं का विश्लेषण आदि तीन स्तरों पर मनोविश्लेषण होता है। हिंदी कहानी प्रसाद और प्रेमचंद के समय दो ध्रुवों पर सिमट रही थी, उस समय जैनेंद्र कुमार ने हिंदी कहानियों में मनोविश्लेषणवादी शैली को स्थान दिया। इस संदर्भ में प्रेमचंद ने पहले संकेत दिया था, ''सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो''[2]

जैनेंद्र ने व्यक्ति के अन्तर्मन की भावनाओं को अपनी कहानी का कथ्य बनाया है। व्यक्ति को केंद्र में रखकर उसकी मनोदशा, भावनाओं, जीवन की विषम परिस्थितियों से उत्पन्न उसकी व्यक्तिगत समस्याओं तथा उनके कारणों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जैनेंद्र की कहानियों में मिलता है। उन्होंने सुगठित कथानक की अपक्षा संवेदनशील पात्रों के जीवन की छोटी–छोटी और सामान्य–सी घटनाओं को ही कहानी का रूप दिया हैं। उनकी कहानी की घटनाएँ दिखने में छोटी जरूर होती है, परंतु विचार और अर्थ की दृष्टि से जटिल होती है। उन्होंने प्रमचंद के बाद हिंदी कहानी की शिल्पगत संभावनाओं का एक विस्तृत और गहन आयाम प्रदान किया है। उन्होंने परंपरागत शिल्प को तोडकर उसे नया रूप देते हुए कहानी को सहज, स्वाभाविक, पारदर्शी भाषा और भंगिमा प्रदान की है। वे पात्रों की मनोदशाओं का, उसके मानसिक द्वंद्व को, उनकी सहज समस्यजन्य चिंताओं को तथा उनके सुख–दुख को वे ऐसे आत्मीय ढंग से छोटे–छोटे वाक्यों में गूंथकर रख देते है कि पाठक कहानी पढ़ता नहीं, स्वंय अनुभव करता है।

'पाजेब' उनकी महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है, जिसमें उन्होंने बालमनोविज्ञान को रेखांकित करते हुए बडों के आचरण को भी कटघरे में खडा किया है। इसमें लेखक ने आत्मकथात्मक शैली में आठ वर्ष के बच्चे के प्रति किया गया व्यवहार और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप बालक के व्यवहार को उजागर किया है। परिवार में पाजेब खोने की एक छोटी–सी घटना घटती है। चोरी का शक पहले नौकर और बाद में बच्चे पर किया जाता है। पिता इस समस्या को सुलझाने के लिए किताबों में पढ़े मनोविज्ञान का सहारा लेता है। छोटे आशुतोष के मन में भय का वातावरण निर्माण कर उससे पूरा सच निकालना चाहते ह, जिसमें वह असफल होता है। कहानी में लेखक ने बालमनोविज्ञान का सुक्ष्म और गहन ज्ञान होने का परिचय दिया है। हमारा समाज आज व्यापारियों के चंगुल में फँसता जा रहा है। जैनेंद्रजी बाजार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते ह, बाजार में एक नई तरह की पाजेब चली है। पैरों में पड़कर वे बड़ो अच्छी मालूम होती है। उनकी कड़ियाँ आपस में लचक के साथ जुड़ी रहती है कि पाजेब की मानो निज का आकार कुछ नहीं है, जिसके पाँव में पड़ें उसी के अनुकूल हो रहती है। घर में एक के लिए कोई चीज आती है तो दूसरा बच्च मन में भी ईर्ष्या निर्माण होती है। कहानी बाल मनोवृति के साथ बडों के मनोवृति को स्पष्ट करती है। जब मुन्नी के लिए बुआ पाजेब लाती है, आशु भी अपने लिए सायकिल की माँग करता है। साथ में बच्चों की माँ के मन में पाजेब की पहनने की इच्छा निर्माण होती है। इससे जैनेंद्र के पात्र कोई व्यक्ति विशेष न होकर एक सहज और सरल मानव होने का परिचय मिलता है।

सामान्यतः हमारे घर में कोई चाज न मिलने पर उसकी खोज शुँरू हो जाती है। उसे मिलने और न मिलनेवाली हर जगह पर ढूँढा जाता है। कहानी में भी शाम के समय पाजेब न मिलने के कारण खोज शुरू हो जाती ह। आशु की माँ हर जगह ढूँढती है। पाजेब न मिलने पर पहले शक नौकर बंशी पर होता है। उसके इन्कार करने पर बेटे आशुतोष पर शक किया जाता है। उसकी आदतें, स्वभाव और हर व्यवहार पर ध्यान दिया जाता है। बातों ही बातों से पता चलता है कि उसी शाम को आशु ने इत्तफाक से पतंग और डोर लायी है। कहानी में पिता और बेटा आशु दो मुख्य पात्र है। यहाँ पिता पूर्वग्रह ग्रस्त होने के कारण उनका मानना है कि बच्चे की फरमाइश पूरी न होने में घर में चोरी भी कर सकते है। यहाँ आशु एक अच्छे चरित्र का लडका है। अपराधी न होने पर भी उसे अपराधी होने की पोडा से गुजरना पडता है। अगले दिन पुछताछ शुरू हो जाती है। पिता किताब क पढ़े–लिखे सिध्दांत से सच बाहर निकालना चाहता है। उसका मानना है कि स्नेहभरे व्यवहार और इनाम के लालच से बच्चे सच निकाला जा सकता है। बच्चे के प्रति अतिरिक्त स्नेह दिखाकर उसे बुरी आदत से बचाना चाहते है। उनका मानना है कि पाजेब का खोना बड़ी बात नहीं है, परंतु चोरी की आदत भयावह हो सकती है। अतः वह आशु के साथ प्यार भरा करना व्यवहार चाहता है। जब आशु कुछ न बताते हुए चुप रहता है, तो उसके प्रति शक बढ़ जाता है। आशु के समझ में नही आता कि उसने गुनाह किया नहीं फिर भी उससे जवाब क्यों लेना चाहते हैं। जब आशु कुछ बोल नहीं पाता देखकर पिता तर्क के आधार पर पुछते है कि पाजेब तुमने छुन्नू को दी है न? आशु पर दबाव होने के कारण पुछे गये सवाल पर सिर्फ गर्दन हिलारकर जवाब देता है। यहाँ आशु के अपराध को स्वीकार करने की मानसिकता के पीछे उसका अवचेतन काम करता दिखाई देता है। उसे इतना समझ में आ गया है कि झूठ कहने से संकट टल जाता है। अपराध से बचने के लिए हां में जवाब देता है, परंतु उससे बाहर निकलने की बजाय फँसता चला जाता है।

बाद में अदालती कार्यवाही शुरू होती है। वह 'छुन्नू के पास नहीं हुई तो कहाँ से देगा' एक ही जवाब बार–बार दोहराता है। कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता है। उसका व्यक्तित्व के निर्माण में आस–पास के परिवेश की अहम भूमिका होती है। नकारात्मकता अपराध का जन्म द सकती है। स्पष्ट है कि यहाँ लेखक ने आशु के द्वारा मध्यवर्गीय मानसिकता को उजागर किया है।

पिता आशु को छन्नू के पास से पाजेब लाने के लिए कहते हैं। इनाम का लालच दिखाया जाता है। आशु जानता है, पाजेब छुन्नू के पास नहीं है। बच्चे के व्यवहार स खिजकर उसे कोठरी में बंद किया जाता है। छुन्नू की माँ को पूछने पर वह हर माँ की तरह वह अपने बेटे पर विश्वास दिखाती हुई कहती है, वह ऐसा काम कर ही नहीं सकता। परंतु आशु के आरोप करने पर छुन्नू को कटघरे में खड़ा कर आत्मक्लेश करती हुई छुन्नू की माँ बेटे को पीटती है। वह पाजेब का दाम देने के लिए तैयार होती है। अब छुन्नू पर दबाव बढते ही वह भी झूठ का सहारा लेकर आशु पर बाजी पलटना चाहता है। पाजेब आशु के हाथ में देखने का और पतंगवाले को देने का दावा करता है। आशु झूठ पर झूठ बोलते हुए ग्यारह आने को पतंगवाले को पाजेब बेचने की बात स्वीकार करता है। फिर सवालों की आदालती कार्यवाही शुरू हो जाती है। फिर वह खुलकर जवाब न देते हुए हां और ना में ही जवाब देता है। पिता पतंगवाले से पैसे देकर पाजेब लाने की बात कहते है, परुतं वह जाना नहीं चाहता है। क्योंकि उसन पाजेब पतंगवाले को दी ही नहीं तो वापस कैसे ला सकता है। आशु के व्यवहार पर पिता को गुस्सा तो आता है, परंतु क्रोध करने पर बच्च सुधारने की अपेक्षा बिघडते है इसलिए स्वंय को रोकते हैं। अंत में आशु की बुआ आकर बास्केट से पाजेब निकाल कर देती है क्योंकि भूल से उनके साथ चली गयी थी। पलभर में सारा दृश्य बदल जाता है। बच्चां पर शक और दबाव की बनी दीवार ढह जाती है। कहानी का कथ्य हमारे समाज में बहुत सारे परिवार की समस्या हो सकती है। लखक ने रोजमर्रा के हमारे जीवनानुभव और आचरण को कहानी में सुक्ष्मता से रेखांकित किया है। अतः पाठक इसे कहानी के बजाय आपबीती समझते हैं।

अतः कहानी में बाल व्यवहार के साथ माता–पिता और बड़ों के व्यवहार पर टिप्पणी करते हुए बच्चों के बालमनोविज्ञान और व्यवहार को न समझनेवाले बड़ों के आचरण को कटघरे में खड़ा किया है। छाटे–छोटे प्रसंग, संक्षिप्त संवाद और आत्मकथात्मक शैली में लिखी होने कहानी कारण अधिक प्रभावशाली बन गयी है। कहानी में पाजेब की कड़ियों की घटनाएँ एक दूसरे में गूँथी हुई है। समस्या को सुलझाते समय रहस्य बने रहने के कारण पाठकों में अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है।

संदर्भ ..

1. समकालीन विचारधाराएँ और साहित्य– डॉ. राजेंद्र मिश्र
2. कुछ विचार– प्रेमचंद
3. कथा संचयन– संपा. डॉ. शिवशरण कौशिक